इनसे तुम दोस्ती कर लो...

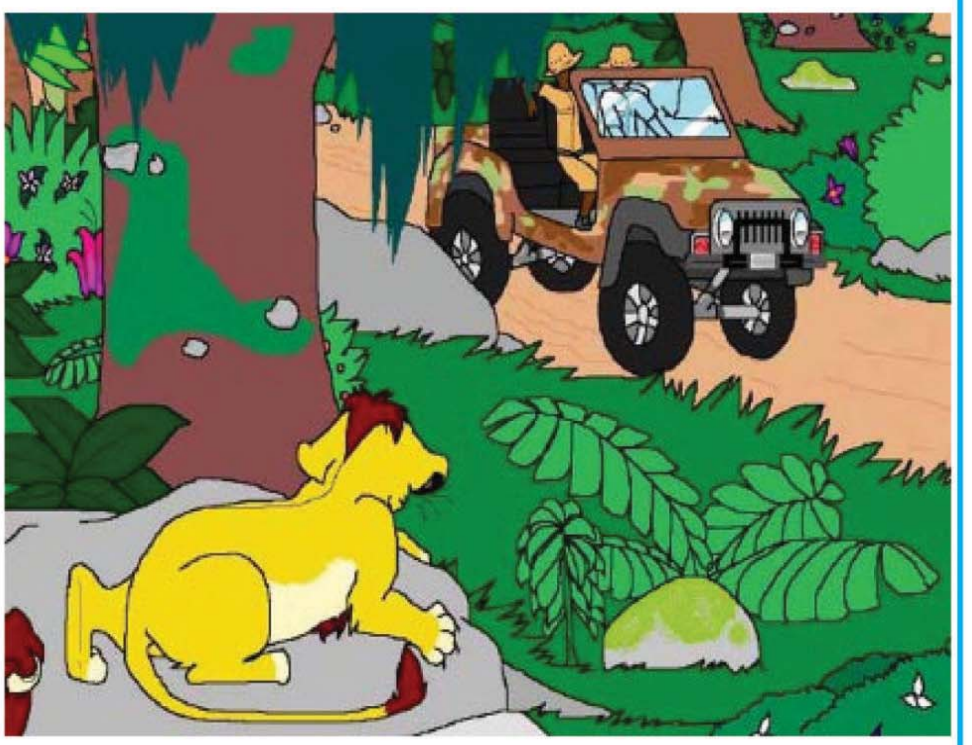

वन्य प्राणियों की तेजी से घट रही संख्या से चिंतित होकर अभ्यारण्यों की स्थापना की गई, ताकि वहां के कुदरती परिवेश में जानवरों को संरक्षित रखा जा सके। हाथी की मस्ती भरी चाल, मोर का नाच, ऊंट की सैर, शेरों की दहाड़ का आप यहां आनंद ले सकते हैं...

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

मारे देश में विश्व के करीब 60 प्रतिशत शेर, 80 प्रतिशत एक सींग वाले गैंडे और 50 प्रतिशत एशियाई हाथी पाए जाते हैं। लेकिन जंगलों की अंधाधुंध कटाई और शिकार के कारण जानवरों की गिनती लगातार घटती जा रही है। इन जीवों के बचाव के लिए भारत में 70 से ज्यादा नैशनल पार्क और 400 जंगली जीवों के अभयारण्य हैं, इसके अलावा पक्षी अभयारण्य भी हैं। इन मूक जानवरों से दोस्ती करके हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए इन्हें महफूज रख सकते हैं।

काजीरंगा नैशनल पार्क

काजीरंगा नैशनल पार्क विश्वभर में एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है। एक सींग वाला गैंडा, हाथी, भारतीय भैंसा, हिरण, सांभर, भालू, बाघ, चीते, भेड़िया, साही, अजगर और अनेक प्रकार की चिड़ियां जैसे पेलीकन, बत्तख, कलहंस, हॉर्नबिल, आइबिस, जलकाक, अगरेट, बगुला, लेसर एडजुलेंट, रिंगटेल फिशिंग इगल आदि भी यहां पाई जाती हैं। काजीरंगा नैशनल पार्क मध्य असम में 430 वर्ग किमी. इलाके में फैला हुआ है। इसका प्राकृतिक परिवेश जंगलों से युक्त है। यहां बड़ी एलिफेंट ग्रास, पेड़, दलदली जगह व उथले तालाब हैं। इसे यूनैस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया है।

जिम कोर्बेट नैशनल पार्क

जिम कोर्बेट नैशनल पार्क दिल्ली से 240 किमी. उत्तर-पूर्व में स्थित है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है। जंगलों से ढंकी पहाड़ियां और घाटियों के बीच से कल-कल करती नदी बहती है। कई बार इसके तट पर घड़ियाल भी देखे जाते हैं। इस नैशनल पार्क में हाथी, चीता, तेंदुआ, सांभर और भालू भी देख सकते हैं।

सरिस्का नैशनल पार्क

1958 में बना सरिस्का नैशनल पार्क टाइगर रिजर्व के लिए प्रसिद्ध है। यह राजस्थान के अलवर जिले में अरावली की पहाड़ियों पर 800 वर्ग किमी. के क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां आप जंगल के राजा को उसके परिवार के साथ घूमते हुए देख सकते हैं। पहाड़ों और जंगलों से घिरा यह अभयारण्य स्तनधारी जानवरों, पक्षियों, सांपों, बाघों और तेंदुओं के लिए प्रसिद्ध है। इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व भी है। कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के दौरान सरिस्का में आश्रय लिया था। यहां मंदिरों के अवशेष देखे जा सकते हैं।

केवलादेव नैशनल पार्क

केवलादेव घाना नैशनल पार्क राजस्थान में स्थित एक प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान है। यह ढाई लाख पक्षियों का घर है। यहां बड़ी संख्या में साइबेरियाई पक्षी भी आते हैं।

राजाजी नैशनल पार्क

830 वर्ग किमी. इलाके में फैला राजाजी नैशनल पार्क हाथियों की संख्या के लिए जाना जाता है। यह उत्तरांचल में देहरादून से 23 किमी. आगे है। महान् स्वतंत्रता सैनानी सी.राजगोपालाचार्य के नाम पर इसका नाम राजाजी नैशनल पार्क रखा गया। यहां हिरण,चीते, सांभर और मोर भी देखे जा सकते हैं। इसके अलावा यह पक्षियों की भी 315 प्रजातियों का निवास है।

दुधवा नैशनल पार्क

दुधवा नैशनल पार्क एक प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान और बाघ संरक्षित क्षेत्र है। यह उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले में शिवालिक पर्वत श्रेणियों की तराई में स्थित है। भारत और नेपाल की सीमाओं से लगा हुआ यह एक विशाल वन क्षेत्र है। दुधवा नैशनल पार्क प्रमुख रूप से बाघों एंव बारहसिंगा के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

गिर वन नैशनल पार्क

गिर वन नैशनल पार्क बाघ संरक्षित क्षेत्र है, जो 'एशियाई बब्बर शेर' के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना 1913 में एशियाई शेरों को संरक्षण प्रदान करने के लिए की गई थी। स्थापना के बाद से यहां सैकड़ों एशियाई सिंहों का जन्म हो चुका है। यह अभयारण्य जूनागढ़ से 60 किमी. दक्षिण-पश्चिम में गुजरात में स्थित है। 1295 वर्ग किमी. इलाके में फैले इस उद्यान में आप तेंदुआ, चित्तीदार हिरण, नीलगाय, चौसिंगा हिरण और चिंकारा भी देख सकते हैं। यहां स्थित विशाल जलाशय में मगरमच्छ भी हैं।

सुंदरबन नैशनल पार्क

सुंदरबन नैशनल पार्क भारत का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है, जो पश्चिम बंगाल में स्थित है। इसमें करीब 250 टाइगर्स हैं। इसे बर्ड वॉचर्स का स्वर्ग माना जाता है। यहां कई रेंगने वाले जानवर भी देखे जा सकते हैं। यह वर्ल्ड हैरिटेज साइट भी है।

कान्हा नैशनल पार्क

कान्हा नैशनल पार्क विश्व के सर्वोत्तम संरक्षित वन्य जीव स्थलों में से एक है, जो मध्य प्रदेश में स्थित है। यह 1,949 वर्ग किमी में फैला है। यह राष्ट्रीय उद्यान बारासिंघा के लिए प्रसिद्ध है, जो विश्व में और कहीं भी नहीं मिलता।

जिज्ञासा

जुगनू कैसे चमकते हैं?

अंधेरी रातों में जुगनूओं को चमकते हुए तो आप सबने जरूर देखा होगा। यदि अंधेरा हो, तो जुगनू का बारी-बारी से चमकना और बंद होना रोमांचक और आर्कषक दिखता है। जुगनू लगातार नहीं चमकते, बल्कि एक निश्चित अंतराल में ही चमकते और बंद होते हैं।

जुगनू के पेट में नीचे की ओर स्किन के ठीक नीचे कुछ हिस्सों में रोशनी पैदा करने वाले अंग होते हैं। इन अंगों में एक रसायन होता है। यह रसायन ऑक्सीजन के संपर्क में आकर रोशनी पैदा करता है। वहां एक और रसायन भी होता है, जो इस रोशनी पैदा करने की क्रिया को उकसाता है, हालांकि यह पदार्थ खुद क्रिया में भाग नहीं लेता है।

पुराने जमाने में लोग रोशनी पैदा करने वाले कीटों को पकड़कर अपनी झोंपड़ियों में उजाले के लिए इस्तेमाल करते थे। ये लोग किसी छेद वाले बर्तन में जुगनूओं को पकड़ कर कैद कर लेते थे और रात को इन कीटों की रोशनी में अपना काम करते थे। दूसरे विश्व युद्ध में जापानी फौजी किसी संदेश या नक्शे को पढ़ने के लिए कीटों से निकलने वाली रोशनी की मदद लेते थे।

जुगनूओं के अलावा और भी जीव हैं जो रोशनी पैदा करते हैं। कुछ बैक्टीरिया, कुछ मछलियां, कुछ किस्म के शैवाल, घोंघे और केकड़ों में भी रोशनी पैदा करने के गुण होते हैं। कुछ फफूंद भी चमकने की क्षमता रखती हैं और लगातार रोशनी पैदा कर कीटों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। कुकरमुत्ते की एक किस्म भी रात में बड़ी तेजी से चमकती है।

हिरण और खरगोश की दोस्ती तो आप देख ही रहे हैं न, लेकिन ये तस्वीर कुछ बेरंग-सी है। तो फिर इसमें मनचाहे रंग भर डालिए।

चोंच का कमाल

कठफोड़वे (वुडपैकर) की 200 से ज्यादा प्रजातियां दुनियाभर में पाई जाती हैं। इन्हें जंगलों में रहना पसंद है। पेड़ों की शाखाओं को चोंच से छेदते हुए ये बहुत शोर करते हैं। माना जाता है कि यह उनका कम्यूनिकेशन का तरीका है। लकड़ी में वे इसलिए भी चोंच मारते हैं, ताकि पेड़ों की छाल के नीचे और शाखाओं पर छुपे हुए छोटे-छोटे कीड़े खा सकें। इनकी लंबी जीभ कीट-पतंगों को पकड़ने में इनकी मदद करती है।

कठफोड़वे अपना घोंसला बनाने के लिए भी चोंच का ही सहारा लेते हैं। ये अपनी चोंच से पेड़ की शाखाओं में छेद बनाते हैं, जो 15 से 45 सेंटीमीटर तक गहरे होते हैं। इन्हीं छेदों में ये अपना घर बनाते हैं और अंडे देते हैं।

कठफोड़वे की चोंच बहुत मोटी होती है और इनके सिर में एक खास किस्म की पैडिंग होती है, जिससे वह चोंच मारते वक्त मिलने वाले तेज़ झटकों से सुरक्षित रहता है।

छोटी टांगों और तीखे नाखूनों के कारण ये पेड़ की छाल के साथ आसानी से चिपक जाते हैं। इनके पैरों में दो खुर आगे और दो पीछे की ओर होते हैं। इसे 'जाइगोडैक्टिल फीट' कहते हैं।

ये दोनों मिलकर अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं। जन्म के समय इनके बच्चे अंधे होते हैं और उनके शरीर पर पंख भी नहीं होते।